
RIICO
GROW WITH RAJASTHAN
missiongyan
missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER
BATCH
CLASS 12th | HISTORY
राजा, किसान और नगर
Chapter-2 | Part-10 आरंभिक राज्य और अर्थव्यवस्थाएँ (लगभग 600 ई.पू. से 600 ई.)

आज क्या पढेंगे ?

अभ्यास प्रश्न



5. अभिलेखशास्त्रियों की कुछ समस्याओं की सूची बनाइये ?

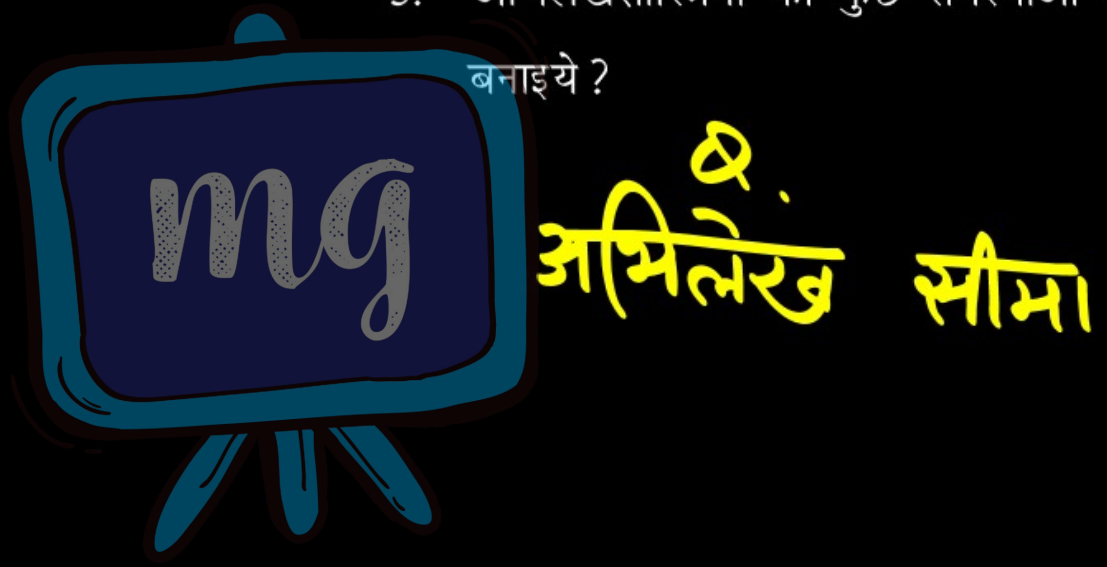

उत्तर : अभिलेखों से प्राप्त जानकारी की भी सीमा होती है–

1. कभी कभी इसकी तकनीकी सीमा होती है। अक्षरों को हल्के ढंग से उत्कीर्ण किया जाता है जिन्हें पढ़ पाना मुश्किल होता है।
2. अभिलेख नष्ट भी हो सकते है जिससे अक्षर लुप्त हो जाते हैं।

3. अभिलेखों के शब्दों के वास्तविक अर्थ के बारे में पूर्ण रूप से ज्ञान हो पाना भी हमेशा आसान नहीं होता है। क्योंकि कुछ अर्थ किसी विशेष स्थान या समय से संबंधित होते हैं।

4. यद्यपि कई हजार अभिलेख प्राप्त हुए है लेकिन सभी के अर्थ नहीं निकाले जा सके हैं।

5. अनेक अभिलेख और भी रहे होंगे परन्तु कालांतर में वे सुरक्षित नहीं बचे हैं। इसलिए अभी जो अभिलेख उपलब्ध है। वे संभवत: कुल अभिलेखों के अंश मात्र है।

6. एक मौलिक समस्या यह भी है कि अभिलेख बड़े और विशेष अवसरों का ही उल्लेख करते हैं। यह जरूरी नहीं है कि जिन्हें हम आज राजनीतिक और आर्थिक रूप से महत्वपूर्ण मानते हैं उन्हें अभिलेखों में अंकित किया गया हो।

उदाहरण के लिए – खेती की दैनिक प्रक्रिया और रोजमर्रा के जिन्दगी के सुख दुख का उल्लेख इनमें नहीं है।

7. अभिलेख सदैव उन्हीं लोगों के विचार व्यक्त करते हैं जो उन्हें बनवाते हैं। इनमें सामान्य लोगों के विचारों के विषय में जानकारी नहीं मिलती है।

6. मौर्य प्रशासन के प्रमुख अभिलक्षणों की चर्चा कीजिए। असोक के अभिलेखों में इनमें से कौन-कौनसे तत्वों के प्रमाण मिलते हैं।

उत्तर :

मौर्य साम्राज्य का प्रशासन :

मौर्य साम्राज्य के 5 प्रमुख राजनीतिक केन्द्र थे –

1. राजधानी – पाटलिपुत्र
2. तक्षशिला (वर्तमान – पाकिस्तान)
3. उज्जयिनी
4. तोसालि (उड़ीसा में)
5. सुवर्णगिरि (दक्षिण में कर्नाटक)

प्रांतीय केन्द्र/प्रांत

- इस सबका उल्लेख असोक के अभिलेखों में किया गया है।
- आधुनिक पाकिस्तान के पश्चिमोत्तर सीमांत प्रांत से लेकर आंध्र प्रदेश, उड़ीसा और उत्तराखंड तक हर स्थान पर एक जैसे संदेश उत्कीर्ण किये गये थे।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



प्रशासनिक व्यवस्था :

- इतने बड़े साम्राज्य की प्रशासनिक व्यवस्था के बारे में इतिहासकारों का मानना है कि पूरे साम्राज्य में एक जैसी व्यवस्था रखना संभव नहीं था।
- साम्राज्य में शामिल क्षेत्र बड़े विविध और भिन्न भिन्न प्रकार के थे – कहां अफगानिस्तान के पहाड़ी क्षेत्र और कहां उड़ीसा के तटवर्ती क्षेत्र।
- संभव है कि सबसे अधिक प्रशासनिक नियंत्रण साम्राज्य की राजधानी तथा उसके आस पास के प्रांतीय केन्द्रों पर ही रहा हो।

- इन प्रांतों का चयन बड़े ध्यान से किया गया था। तक्षशिला व उज्जयिनी दोनों ही लंबी दूरी वाले महत्वपूर्ण व्यापारिक मार्ग पर स्थित थे। जबकि सुवर्णगिरि (सोने के पहाड़) कर्नाटक में सोने की खदान के लिए उपयोगी था।

सम्राट के अधिकारियों के कार्य :

(मेगस्थनीज के विवरण का एक अंश)

1. सम्राट के कुछ अधिकारी नदियों की देख रेख तथा भूमि मापन का काम करते थे। (जैसा कि मिश्र में होता था)।
2. कुछ प्रमुख नहरों से उपनहरों के लिए छोड़े जाने वाले पानी के मुखद्वार का निरीक्षण करते थे ताकि हर स्थान पर पानी की समान पूर्ति हो सके।

3. कुछ अधिकारी शिकारियों का संचालन करते हैं तथा शिकारियों के कृत्यों के आधार पर उन्हें इनाम या दंड देते हैं।

4. कुछ कर वसूली करते हैं तथा भूमि से जुड़े सभी व्यवसायों का निरीक्षण करते हैं।

5. कुछ लकड़हारों, बढ़ई, लोहारों और खननकर्ताओं का भी निरीक्षण करते हैं।

- साम्राज्य के संचालन के लिए भूमि और नदियों दोनों मार्गों के आवागमन बना रहना अत्यंत आवश्यक था।

- राजधानी से प्रांतों तक जाने में कई सप्ताह या महीनों का समय लगता होगा अतः यात्रियों के खान पान व सुरक्षा की व्यवस्था भी करनी पड़ती होगी। यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि सेना, सुरक्षा का एक प्रमुख माध्यम रही होगी।

सैनिक गतिविधियां : (मैगस्थनीज द्वारा)

सेना के संचालन के लिए एक समति दशा छः उपसमितियां थी। उपसमितियों के कार्य :-

1. पहली उपसमिति – नौसेना का संचालन करना
2. दूसरी उपसमिति – यातायात व खानपान का संचालन करना।
3. तीसरी उपसमिति – पैदल सैनिकों का संचालन।
4. चौथी उपसमिति – अश्वारोहियों का संचालन।
5. पाँचवीं उपसमिति – रथरोहियों का संचालन
6. छठी उपसमिति – हाथियों का संचालन करना।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

दूसरी उपसमिति के दायित्व विभिन्न प्रकार के थे-

(i) उपकरणों को ढोने के लिए बैलगाड़ियों की व्यवस्था करना।

(ii) सैनिकों के लिए भोजन और जानवरों के लिए चारे की व्यवस्था करना।

(iii) सैनिकों की देखभाल के लिए सेवकों और शिल्पकारों की नियुक्ति करना।

अर्थशास्त्र में सैनिक और प्रशासनिक संगठन का विस्तृत विवरण मिलता है।

- यूनानी स्त्रोतों के अनुसार मौर्य सम्राट के पास 6 लाख पैदल सैनिक, 30 हजार घुड़सवार, 9 हजार हाथी थे।

7. यह बीसवीं शताब्दी के एक सुविख्यात अभिलेखशास्त्रों डी.सी. सरकार का वक्तव्य है कि – भारतीयों के जीवन, संस्कृति ओर गतिविधियों का ऐसा कोई पक्ष नहीं है जिनका प्रतिबिंब अभिलेखों में नहीं है। चर्चा कीजिए।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

तारीख

उत्तर : डी.सी. सरकार ने ठीक ही कहा है भारतीयों के जीवन, संस्कृति तथा गतिविधियों के बारे में अभिलेखों से निम्नलिखित जानकारी मिलती है –

1. काल निर्धारण : अभिलेखों में इनके निर्माण की तिथि उत्कीर्ण होती है और जिन अभिलेखों में तिथि नहीं होती उन्हें पुरालिपि अथवा लेखक शैली के आधार पर पढ़ कर काल निर्धारण कर लेते हैं।

2. शासकों के नाम, उपाधियां एवं वंशावलियों की जानकारी : असोक के लिए अभिलेखों में देवनांप्रिय तथा प्रियदस्सी लिखा है। कुषाण शासकों ने स्वयं को देवपुत्र लिखवाया। इन अभिलेखों को समझते ही इतिहासकारों ने सम्राटों की वंशावलियों बना लीं।

3. समकालीन भारत की सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक व राजनीतिक स्थिति की जानकारी –

सामाजिक – अभिलेखों से समान के वर्गों का पता लगा है।

आर्थिक – अभिलेखों से समाज के कार्य, व्यापार, उपमहाद्वीप से बाहर व्यापार, समृद्धशाली नगरों की जानकारी के साथ साथ ग्रामीण क्षेत्रों की स्थिति भी पता लगी।

धार्मिक – देवी देवताओं के बारे में पता लगा है राजा भी अपनी उच्च स्थिति प्राप्ति के लिए देवी–देवताओं से स्वयं की तुलना करते हैं। अतः धर्म को मानते थे। धम्म के भी अभिलेख मिले हैं।

राजनीतिक स्थिति – साम्राज्यों का उनके प्रशासन का, सेनाओं का, युद्धो का, सामंतों का पता लगा है।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

4. प्रशासन की जानकारी – अभिलेखों में साम्राज्यों के प्रशासनिक व्यवस्थाओं एवं सैनिक गतिविधियों का भी उल्लेख है। मौर्य साम्राज्य के प्रशासन, महामात्र, प्रतिपेदकों की भी जानकारी मिली है।
5. राज्यों की सीमाओं की जानकारी – मौर्य काल के 5 प्रमुख राजनीतिक केन्द्र – पाटलीपुत्र, तक्षशिला, उज्जयिनी, सुवर्णगिरी, तोसलि थे।

6. राज्य और किसानों के बीच संबंध की जानकारी – भूमिदान प्रचलन से राज्य और किसानों के बीच के संबंध की जानकारी मिलती है।

7. ऐतिहासिक घटनाओं की जानकारी – प्रयाग प्रशस्ति से समुद्र गुप्त की उपलब्धियों की तथा असोक के अभिलेख से कलिंग विजय की जानकारी मिली है।

8. शासकों के चरित्र एवं व्यक्तित्व की जानकारी जैसे प्रयाग प्रशस्ति से समुद्रगुप्त के तथा असोक के अभिलेखों से उसके व्यक्तित्व की व रूद्रदमन के अभिलेखों से उसके चरित्र एवं व्यक्तित्व की जानकारी मिलती है।

9. सामाजिक वर्गों की जानकारी – नगरों में रहने वाले वर्गों की जानकारी दानात्मक अभिलेखों से प्राप्त होती है। नगरों में – बुनकर, बढ़ई, कुम्हार, स्वर्णकार, लौहार, धार्मिक गुरू, अधिकारी, व्यापारी तथा राजा रहते थे।

10. भाषाओं और लिपियों की जानकारी – अधिकांश अभिलेख प्राकृत भाषा में लिखे गये है। अत: प्राकृत भाषा जनसाधारण की भाषा होगी। अभिलेख संस्कृत, पालि, तमिल, तेलगू आदि भाषा में भी मिलते हैं अत: साहित्यिक प्रगति की भी जानकारी मिलती है। अशोक के अभिलेख ब्राह्मी तथा खरोष्ठी लिपि में लिखे गये है। अत: मौर्यकाल की लिपियों के बारे में भी जानकारी मिली है।

8. उत्तर-मौर्यकाल में विकसित राजत्व के विचारों की चर्चा कीजिए।

उत्तर : भारत में अपना स्थायी साम्राज्य स्थापित करने के लिए स्वयं को दैवीय सिद्ध करना आवश्यक था। यह कार्य राजाओं ने अपने सिक्कों, अभिलेखों, मूर्तियों एवं साहित्य द्वारा किया।

1. दैविक राजा : कुषाणों ने सिक्कों में देवताओं के साथ अपनी तस्वीरें, छपवाई साथ ही उत्तर प्रदेश में मथुरा के निकट माट में तथा अफगानिस्तान के एक देवस्थान में अपनी मूर्तियां स्थापित कर स्वयं को देवतुल्य बताने का प्रयास किया।

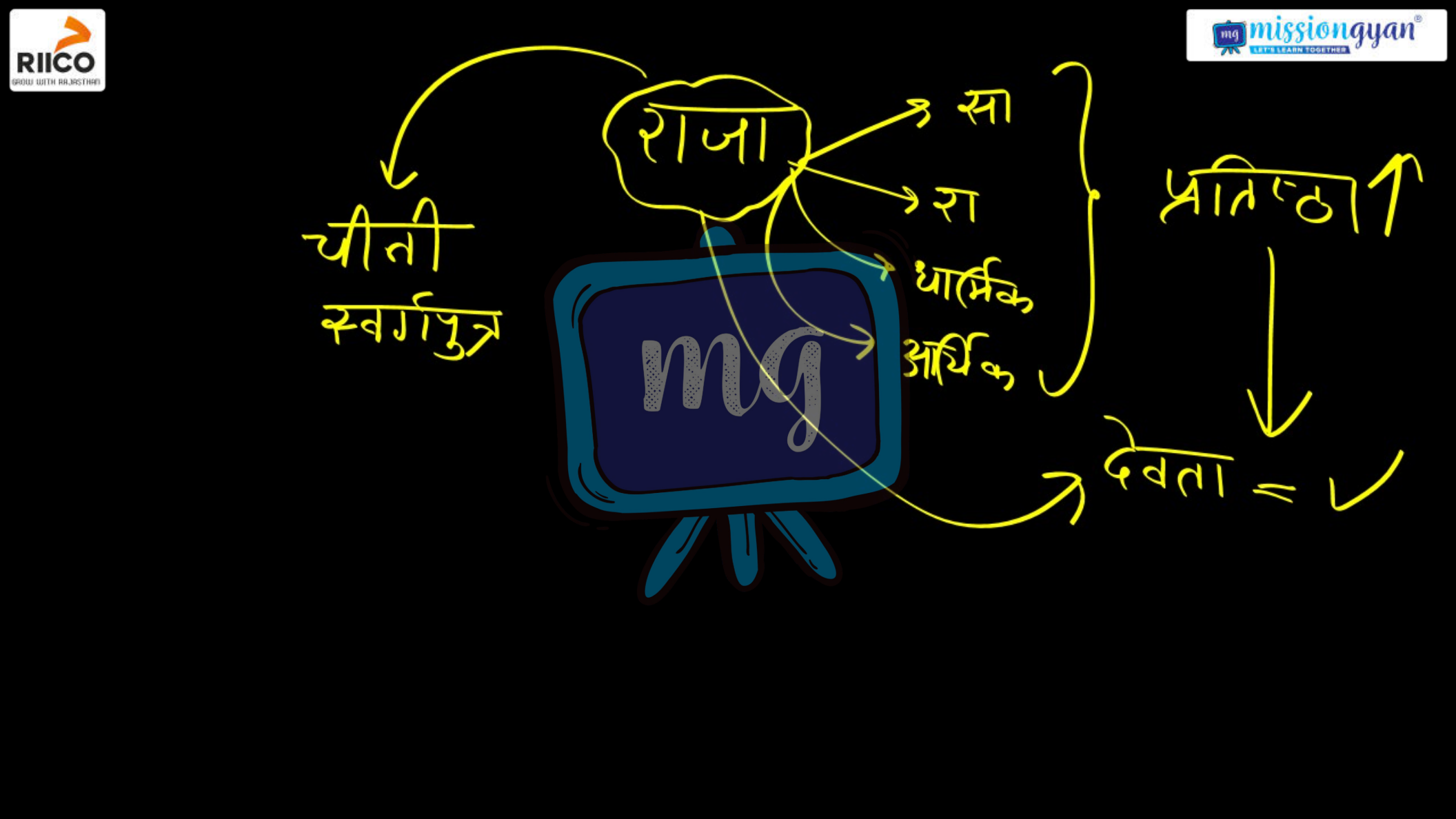
राजा
सा
रा
धार्मिक
आर्थिक
चीनी
स्वर्गपुत्र
प्रतिष्ठा
देवता

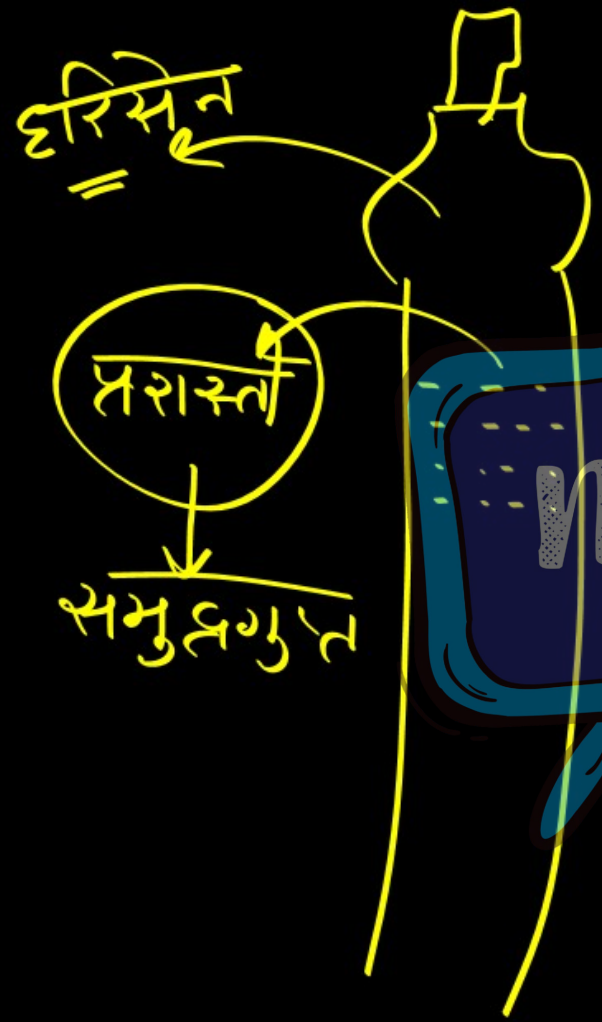

2. कुषाण शासक अपने नाम के आगे देवपुत्र की उपाधि लगाकर भी स्वयं को देवताओं के तुल्य लाने का प्रयास करते थे।

3. गुप्त शासकों का राजत्व का विचार : गुप्त शासकों का इतिहास भी साहित्य, सिक्कों और अभिलेखों से लिखा गया है, इसके अलावा कुछ कवियों ने अपने राजा या स्वामी की प्रशंसा में प्रशस्तियां लिखी हैं, जो इतिहास निर्माण में उपयोगी सिद्ध हुई है। यद्यपि ये तथ्यात्मक विवरण की अपेक्षा काव्यात्मक ग्रंथ ही है।

- ऐसी ही एक प्रशस्ति प्रयाग प्रशस्ति में हरिषेण ने गुप्त सम्राट समुद्रगुप्त को परमात्मा पुरूष बताकर अनेक देवी देवताओं के समतुल्य रखकर राजत्व के सिद्धांत का पालन करते हुए देवतुल्य बताया है।
- इस प्रकार से अनेक राजाओं ने अपने आप को धर्म से तथा देवी देवताओं से जोड़कर राजत्व के नवीन सिद्धांत द्वारा अपनी स्थिति उच्च करके अपने साम्राज्य को स्थायी बनाने का प्रयास किया।

9. वर्णित काल में कृषि के तौर-तरीकों में किस प्रकार से परिवर्तन हुए?

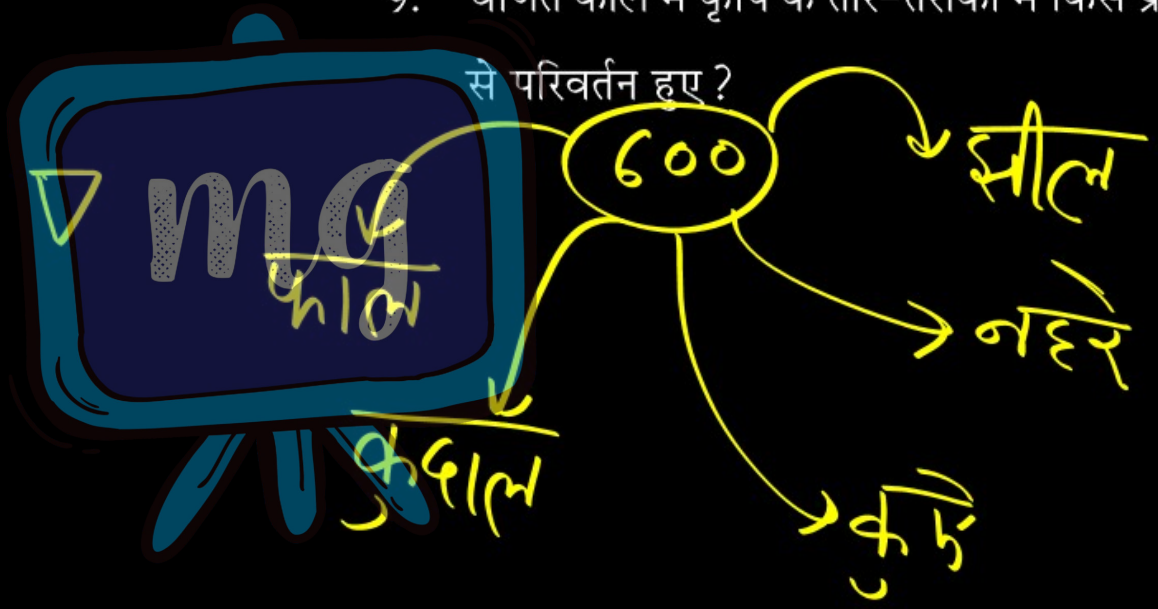

उत्तर : वर्णित काल (600 ई.पू. – 600 ई. तक) में कृषि के तौर तरीकों में निम्न परिवर्तन हुए–

1. राजस्व की बढ़ती दरों को चुकाने के लिए कृषि उपज बढ़ाने के तरीके ढूंढे जाने लगे।
2. उपज बढ़ाने का एक तरीका हल का प्रचलन था जो 600 ई. पू. से ही गंगा तथा कावेरी घाटियों के उर्वर कछारी क्षेत्र में फैल गया था।

3. जिन क्षेत्रों में भारी वर्षा होती थी वहां लोहे के फाल वाले हलों के माध्यम से उर्वर भूमि की जुताई की जाने लगी।

4. गंगा की घाटी के क्षेत्रों में धान की रोपाई की वजह से उपज में भारी वृद्धि होने लगी। हालांकि किसानों को इसके लिए कमरतोड़ मेहनत करनी पड़ती थी।

5. यद्यपि लोहे के फाल वाले हल से फसलों की उपज बढ़ने लगे थी लेकिन ऐसे हलों का उपयोग कुछ ही हिस्सों में सीमित था। पंजाब और राजस्थान जैसे अर्द्धशुष्क जमीन वाले क्षेत्रों में लोहे के फाल वाले हल का प्रयोग 20वीं सदी से शुरू हुआ।

6. उपमहाद्वीप के पूर्वोत्तर और मध्य पर्वतीय क्षेत्रों में रहने वाले लोग खेती के लिए कुदाल का प्रयोग करते थे जो ऐसे इलाके के लिए कहीं अधिक उपयोगी था।

7. उपज बढ़ाने का एक और तरीका कुओं, तालाबों और कहीं-कहीं नहरों के माध्यम से सिंचाई करना था।
8. व्यक्तिगत लोगों ओर कृषक-समुदायों ने मिलकर सिंचाई के साधन निर्मित किये।
9. व्यक्तिगत तौर पर तालाबों, कुओं और नहरों जैसे सिंचाई के साधनों का निर्माण राजा या प्रभावशाली लोग करवाते थे।

10. खेती की नई तकनीकों से यद्यपि उपज तो बढ़ी लेकिन इसके लाभ समान नहीं थे।
11. खेती से जुड़े लोगों में उत्तरोत्तर भेद बढ़ता जा रहा था। बड़े-बड़े जमीदारों, छोटे किसानों तथा भूमिहीन खेतीहर श्रमिकों के वर्गों का उदय हुआ।
12. अब भूमि का स्वामित्व महत्वपूर्ण ले गया था।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

Q1. मेगस्थनीज ने सैनिक गतिविधियों के संचालन के लिए एक समिति और ..... उप समितियों का उल्लेख किया है—



A 5

B 8

C 6

D 10

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

Q2. दक्कन और उससे दक्षिण के क्षेत्र में स्थित तमिलकम में किन सरदारों का उद्भव हुआ।

(A) चोल

(B) पाण्डेय

(C) चेर

(D) उपरोक्त सभी

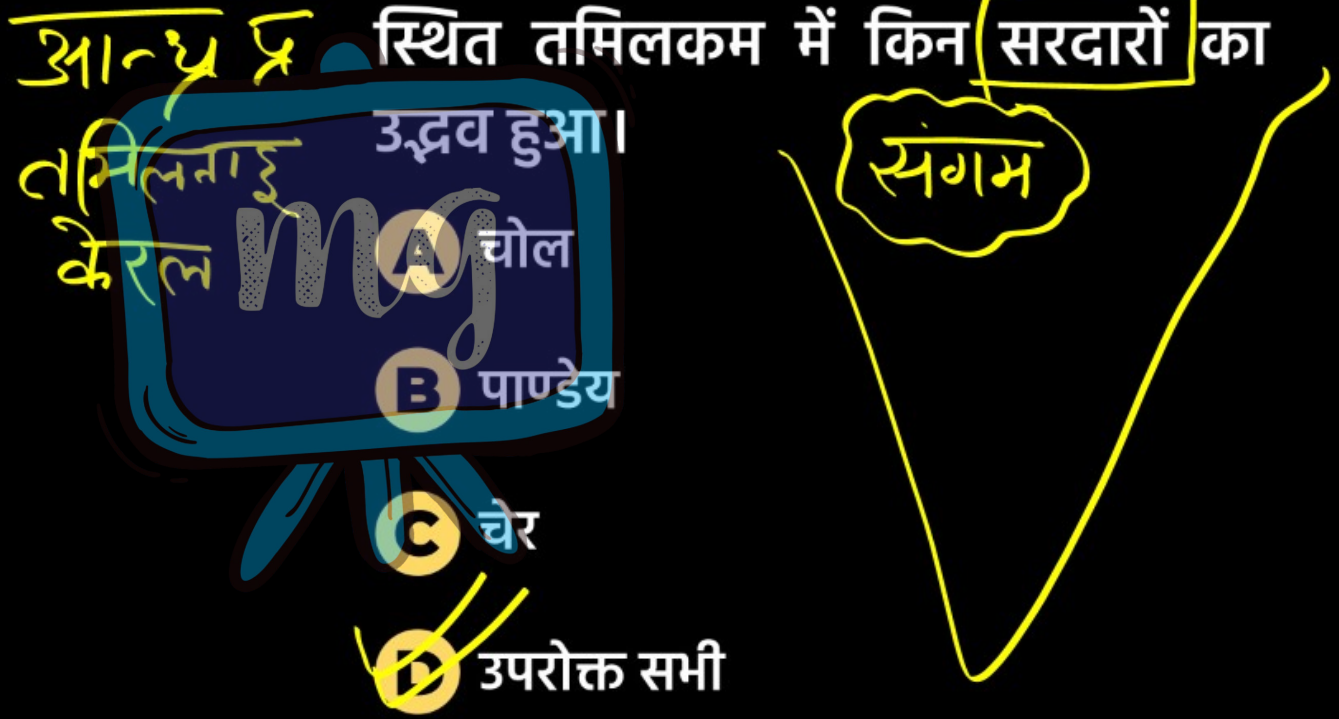

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

Q3. ..... शासकों ने अपने नाम के आगे देवपुत्र की उपाधि लगाई है—

चीनी
↳ स्वर्गपुत्र



A कुषाण

B गुप्त

C मौर्य

D सातवाहन

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

Q4. ..... शासकों ने प्रतिमा और नाम के साथ सबसे पहले सिक्के शासकों ने जारी किए थे—



(A) मौर्य

(B) गुप्त

(C) हिंद-यूनानी

(D) कुषाण

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

Q5. सोने के सिक्के बड़े पैमाने पर प्रथम शताब्दी ईस्वी मे ..... ने जारी किए थे —



(A) मौर्य

(B) गुप्त

(C) कुषाण

(D) वाकाटक

रूद्रसेन
शादी
समावति
गुप्त

Q6. आधुनिक भारतीय भाषाओं में प्रयुक्त लगभग सभी लिपियों का मूल है—

जेम्स प्रिंसेप



(A) ब्राह्मी लिपि

(B) अरामईक

(C) खरोष्ठी

(D) यूनानी

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

Q7. पश्चिमोत्तर अभिलेखों में प्रयुक्त लिपि है—

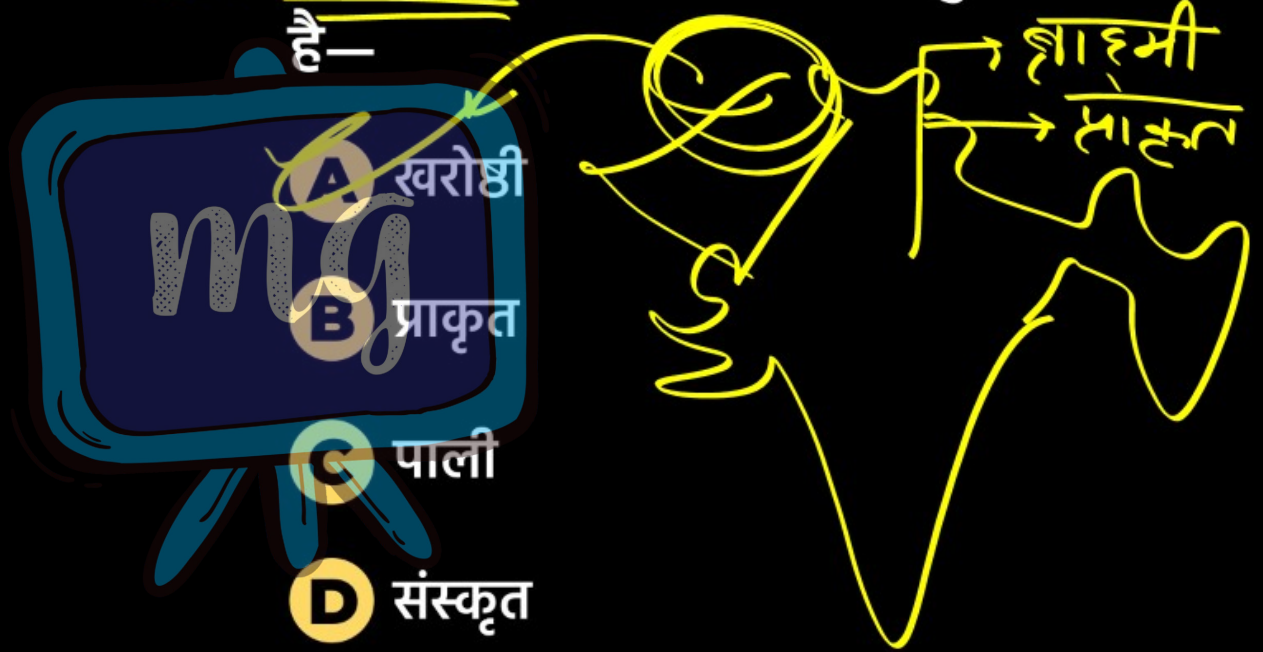

A खरोष्ठी

B प्राकृत

C पाली

D संस्कृत

रिक्त स्थान

Q1. ..... के नाम से प्रसिद्ध राज्यों में कई लोगों का समूह शासन करता था।

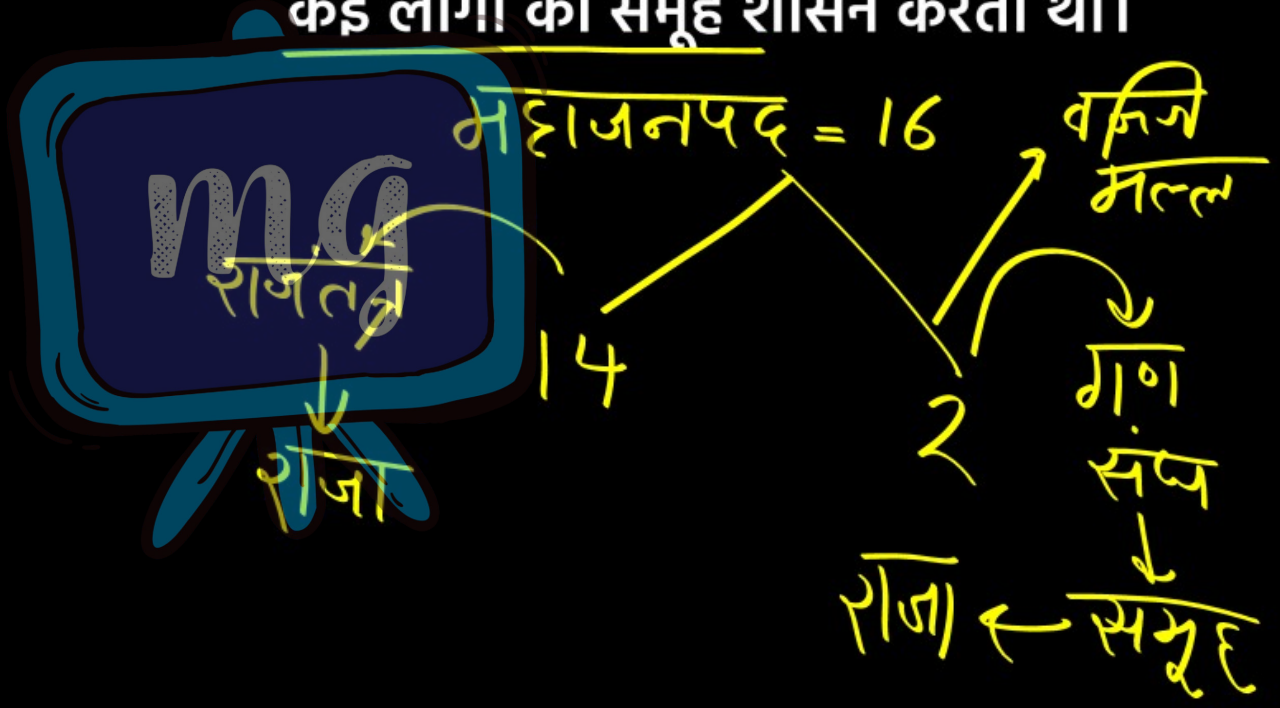

रिक्त स्थान

उत्तर: गण और संघ ।



रिक्त स्थान

Q2. भगवान महावीर और भगवान बुद्ध ..... से संबंधित थे।



रिक्त स्थान

उत्तर: गणों।



रिक्त स्थान

Q3. छठी शताब्दी ईसा पूर्व से संस्कृत में ब्राह्मणों ने ..... नामक ग्रंथों की रचना शुरु की।



रिक्त स्थान

उत्तर: - धर्मशास्त्र



रिक्त स्थान

Q4. मौर्य साम्राज्य के संस्थापक ..... का शासन पश्चिमोत्तर ..... तक फैला था।



रिक्त स्थान

उत्तर: चंद्रगुप्त मौर्य, अफगानिस्तान और बलुचिस्तान ।



अति लघुत्तरात्मक प्रश्न

Q1. प्रभावती गुप्त कौन थी ?



अति लघुत्तरात्मक प्रश्न

उत्तर: आरंभिक भारत के सबसे महत्वपूर्ण शासक चंद्रगुप्त द्वितीय की पुत्री जिसने अपने पति की मृत्यु के बाद शासन किया।

अति लघुत्तरात्मक प्रश्न

Q2. हर्षचरित के लेखक कौन थे?



अति लघुत्तरात्मक प्रश्न

उत्तर: हर्षवर्धन के राजकवि बाणभट्ट ।



अति लघुत्तरात्मक प्रश्न

Q3. किन लोगों पर अधिकारियों, सामंतों का नियंत्रण नहीं था ?



अति लघुत्तरात्मक प्रश्न

उत्तर: पशुपालक, संग्राहक, शिकारी, मछुआरे, शिल्पकार, घुमक्कड़ तथा एक ही स्थान पर रहने वाले और जगह-जगह घूम कर खेती करने वाले लोग।

अति लघुत्तरात्मक प्रश्न

Q4. उत्तरी कृष्ण मार्जित पात्र किसे कहा गया है?



अति लघुत्तरात्मक प्रश्न

उत्तर: उत्कृष्ट श्रेणी के मिट्टी के कटोरे और थालियां जिन पर चमकदार कली चढ़ी है।



अति लघुत्तरात्मक प्रश्न

Q5. श्रेणी क्या थी?



अति लघुत्तरात्मक प्रश्न

उत्तर: उत्पादकों और व्यापारियों के संघ।



Q6. मस्तथुवन, सत्थवाह और सेट्टी कौन थे ?



अति लघुत्तरात्मक प्रश्न

उत्तर: बड़े, सफल और धनी व्यापारी।



अति लघुत्तरात्मक प्रश्न

Q7. सबसे पहले कौन से सिक्के प्रयोग में लाए गए?



अति लघुत्तरात्मक प्रश्न

उत्तर: चांदी और तांबे के आहत सिक्के ।

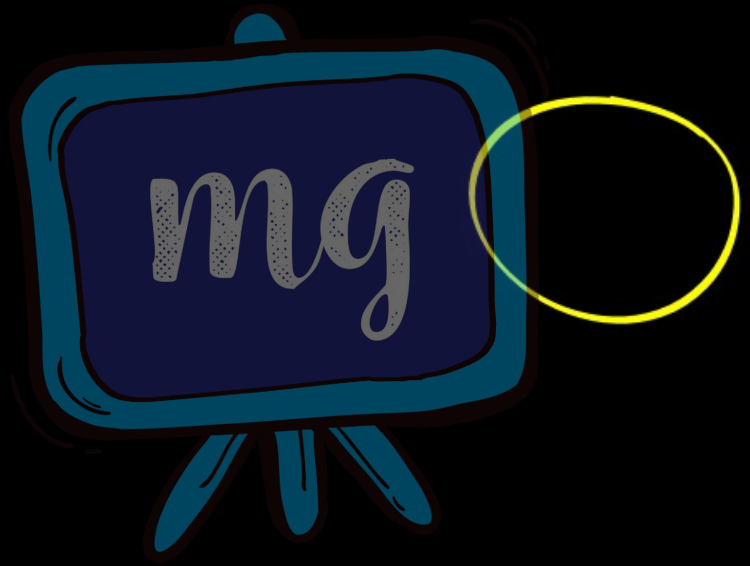

अति लघुत्तरात्मक प्रश्न

Q8. पंजाब और हरियाणा जैसे क्षेत्रों में ..... ने भी अपने सिक्के जारी किए थे?



अति लघुत्तरात्मक प्रश्न

उत्तर: यौधेय कबायली गणराज्यों।



Q9. प्राचीनतम अभिलेख वस्तुतः ..... में थे।



अति लघुत्तरात्मक प्रश्न

उत्तर: प्राकृत ।



जनसामान्य

Q10. प्रतिवेदक कौन थे और इनकी नियुक्ति किसने आरंभ की?



अति लघुत्तरात्मक प्रश्न

उत्तर: सम्राट अशोक द्वारा नियुक्त लोगों के समाचार राजा तक पहुंचाने वाले संवाददाता।

अति लघुत्तरात्मक प्रश्न

Q11. अशोक के धर्म के सिद्धांत ..... थे।



सरल और सार्वभौमिक

अति लघुत्तरात्मक प्रश्न

उत्तर: सरल और सार्वभौमिक ।



अति लघुत्तरात्मक प्रश्न

Q12. प्रभावती गुप्त का दंगुन गांव अभिलेख कब और किसके द्वारा उत्कीर्ण किया गया?



अति लघुत्तरात्मक प्रश्न

उत्तर: शासन के 13 वें वर्ष चक्रदास द्वारा ।



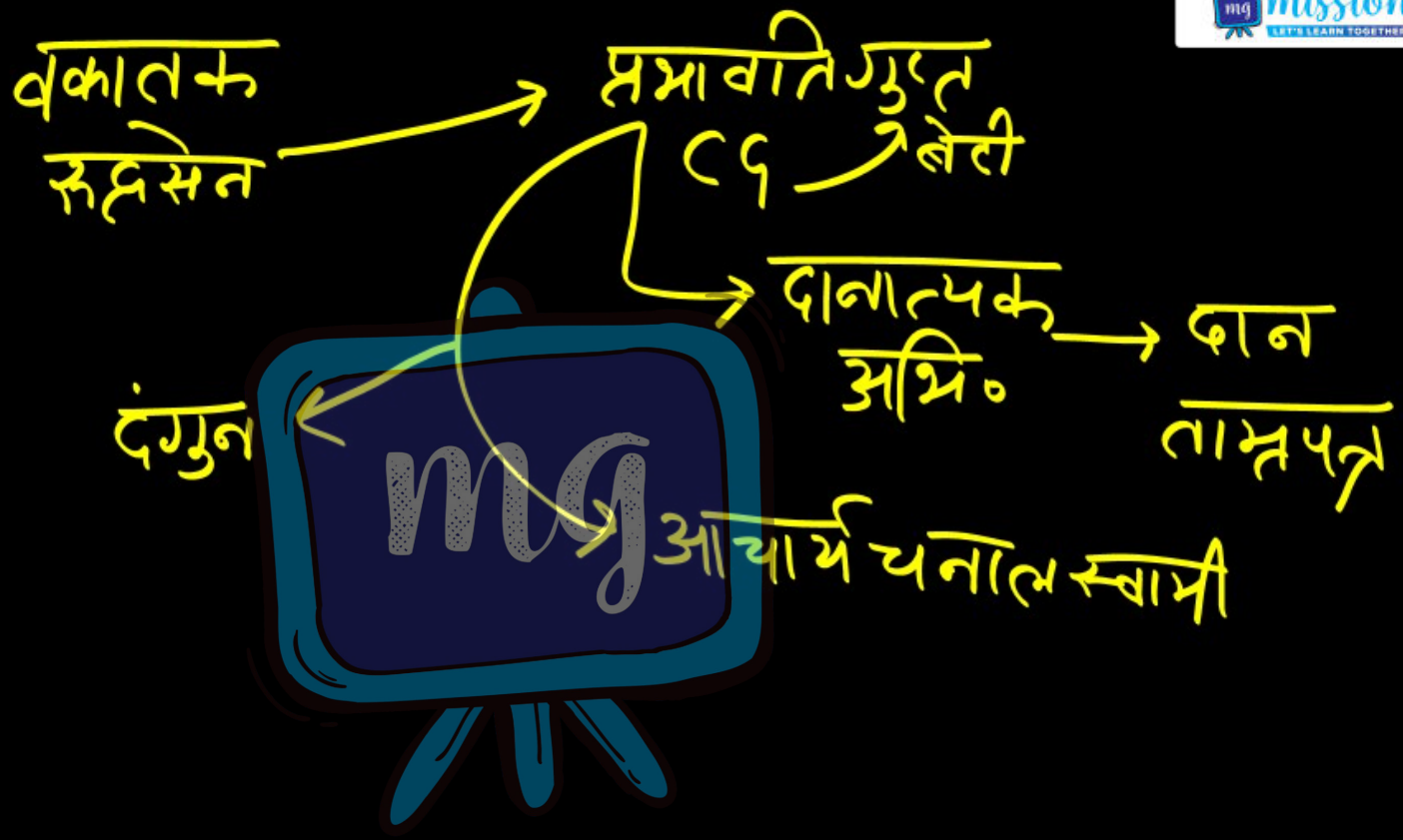
वाकाटक
रुद्रसेन
प्रभावतिगुप्त
बेटी
दानात्मक
अग्नि०
दान
ताम्रपत्र
दंगुन
आचार्य चनालस्वामी

Q13. प्रभावती गुप्त द्वारा दंगुन गांव का दान किसे किया गया ?



अति लघुत्तरात्मक प्रश्न

उत्तर: आचार्य चनालस्वामी को।



अति लघुत्तरात्मक प्रश्न

Q14. कुटुंबिन कौन होते थे ?



अति लघुत्तरात्मक प्रश्न

उत्तर: गांव के गृहस्थ और कृषक ।



Q15. मौर्यकालीन सैनिक और प्रशासनिक संगठन के बारे में विस्तृत विवरण किस ग्रंथ में मिलते हैं?



- इंडिका — मेगस्थनीज
- अर्थशास्त्र — चाणक्य
- त्रिपिटक, जैन, संस्कृत

अति लघुत्तरात्मक प्रश्न

उत्तर: अर्थशास्त्र में (चाणक्य / कौटिल्य द्वारा लिखित)



अति लघुत्तरात्मक प्रश्न

Q16. अग्रहार क्या है?



अति लघुत्तरात्मक प्रश्न

उत्तर: अग्रहार वह भूभाग था जो शासको द्वारा ब्राह्मणों को दान मे दिया जाता था और यह भूमि करमुक्त होती थी।

दीर्घउत्तरात्मक प्रश्न

Q1. अशोक की धम्म नीति क्या थी?



उत्तर: नागरिकों के नैतिक उत्थान हेतु अशोक ने धम्म नीति लागू की। अशोक के धम्म के सिद्धांत बहुत ही साधारण एवं सार्वभौमिक थे जिसके अनुसार लोगों का जीवन इस संसार में और इसके बाद के संसार में अच्छा रहेगा तथा इसका उद्देश्य लोगों के जीवन को कल्याणकारी बनाना था।

जिसमें मुख्य रूप से शामिल था बड़ों का आदर करना, सन्यासियों तथा ब्राह्मणों के प्रति उदारता एवं सेवक और दासों के साथ उदार व्यवहार व दूसरे धर्मों के प्रति सहिष्णुता एवं परंपराओं का आदर । अशोक ने धम्म नीति के प्रचार के लिए धम्म महामात्त नामक राजकीय अधिकारियों की नियुक्ति की।

दीर्घउत्तरात्मक प्रश्न

साथ ही कई इतिहासकारों का यह भी मानना है कि अशोक ने धम्म से साम्राज्य को अखंड बनाए रखने का प्रयास किया।

दीर्घउत्तरात्मक प्रश्न

Q2. छठी शताब्दी ईस्वी पूर्व से छठी शताब्दी ईस्वी तक कृषि के क्षेत्रों में आए मुख्य परिवर्तनों पर चर्चा कीजिए ?



उत्तर: छठी शताब्दी ईसा पूर्व से छठी शताब्दी ईस्वी में उत्पादकता को बढ़ाने के लिए लोहे के फाल वाले हल का प्रयोग, गंगा की घाटी में धान की रोपाई सिंचाई के लिए कुओं, तालाबों, नहरों का निर्माण एवम् पंजाब और राजस्थान जैसे अर्द्धशुष्क जमीन वाले क्षेत्रों में खेती के लिए कुदाल का प्रयोग महत्वपूर्ण परिवर्तन थे जो इस काल में दृष्टिगोचर होते हैं।

उपज बढ़ाने के साधनों पर नियंत्रण के कारण बड़े-बड़े जमींदार और ग्राम प्रधान अधिक शक्तिशाली हो गए तथा किसानों पर अधिक नियंत्रण स्थापित हुआ। शासक वर्ग ने भूमि दान के द्वारा कृषि को नए क्षेत्रों को प्रोत्साहित करने की नीति अपनाई।

दीर्घउत्तरात्मक प्रश्न

Q3. मौर्य वंश के बारे में जानकारी प्राप्त करने के स्त्रोत बताइए।

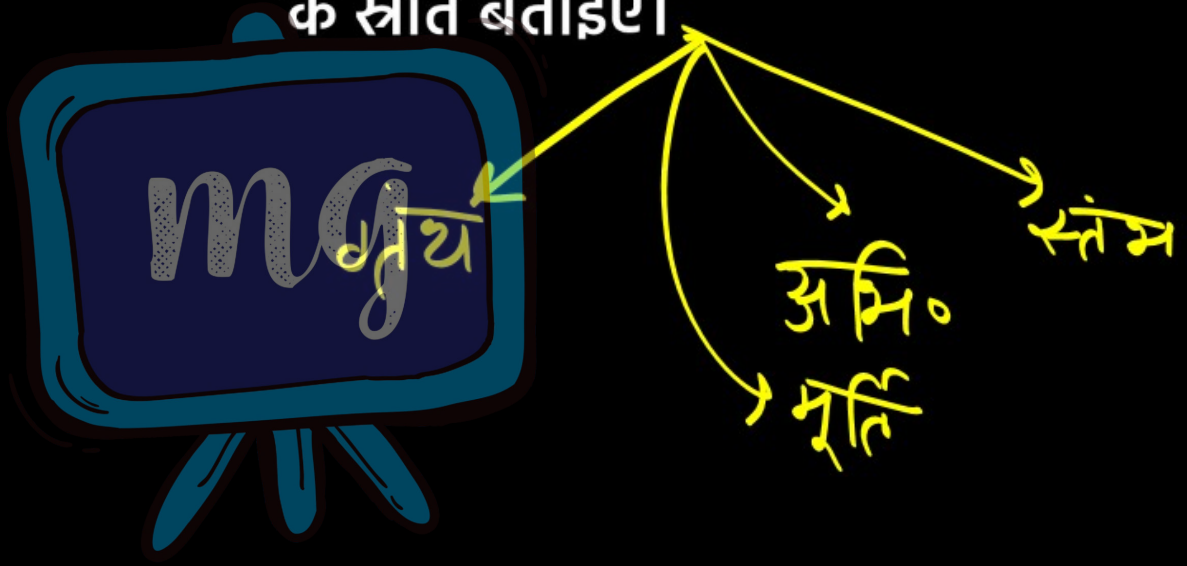

उत्तर: उत्तर-मौर्य साम्राज्य के इतिहास की पुनर्रचना के लिए विभिन्न प्रकार के स्त्रोतों का उपयोग किया गया है। पुरातात्विक प्रमाणों में विशेष रूप से मूर्ति कला तथा समकालीन रचनाएं भी मूल्यवान स्त्रोत हैं।

जैसे- (i) चंद्रगुप्त मौर्य के दरबार में यूनानी राजदूत मेगस्थनीज द्वारा लिखा गया वर्णन (इंडिका) जिसके कुछ अंश ही आज उपलब्ध हैं,

दीर्घउत्तरात्मक प्रश्न

(ii) एक अन्य स्त्रोत जिसका उपयोग किया जाता है, वह है- कौटिल्यकृत अर्थशास्त्र। साथ ही मौर्य शासकों का उल्लेख परवर्ती जैन, बौद्ध और पौराणिक ग्रंथों तथा संस्कृत ग्रंथों में भी मिलता है। ये सभी साक्ष्य बहुत उपयोगी हैं लेकिन पत्थरों और स्तंभ पर मिले अशोक के अभिलेख मौर्यकालीन इतिहास सबसे महत्व महत्वपूर्ण स्त्रोत माने जाते हैं।

(ii) एक अन्य स्त्रोत जिसका उपयोग किया जाता है, वह है- कौटिल्यकृत अर्थशास्त्र। साथ ही मौर्य शासकों का उल्लेख परवर्ती जैन, बौद्ध और पौराणिक ग्रंथों तथा संस्कृत ग्रंथों में भी मिलता है। ये सभी साक्ष्य बहुत उपयोगी हैं लेकिन पत्थरों और स्तंभ पर मिले अशोक के अभिलेख मौर्यकालीन इतिहास सबसे महत्व महत्वपूर्ण स्त्रोत माने जाते हैं।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

मौर्य प्रशासन

- स्रोत
  - ग्रंथ
  - सिक्के
  - मूर्ति
  - स्तंभ
- क्षेत्र
- प्रशासनिक समिति → (1) सैनिक (6) उपसमिति

